डॉल्फिन के नाम होते हैं!

डॉल्फिन्स की संप्रेषण क्षमता काफी विकसित है। अनुसंधान से पता चला है कि प्राकृतिक स्थिति में डॉल्फिन के बीच संवाद में 50 प्रतिशत हिस्सा तो नाम पुकारने का होता है।

इन्सानों के ही नाम होते हों, ऐसा नहीं है। एक डॉल्फिन (*टर्सिओप्स ट्रन्केटस*) पर शोध के दौरान ऐसे संकेत मिले हैं जिनसे लगता है कि डॉल्फिन्स भी एक-दूसरे को नाम से पुकारते हैं और पहचानते हैं। यह बात फ्लोरिडा की सरासोता खाड़ी में रहने वाले डॉल्फिन्स के अध्ययन से उजागर हुई है।

ऐसा पता चला है कि प्रत्येक डॉल्फिन एक खास किस्म की सीटी की आवाज़ निकालता है जिससे बाकी साथी उसे पहचानते हैं। सेन्ट एन्ड्रूज़ विश्वविद्यालय के विन्सेंट जैनिक के मार्गदर्शन में हुए इस शोध कार्य के दौरान शोधकर्ताओं ने अलग-अलग डॉल्फिन की विशिष्ट सीटी का कृत्रिम संस्करण तैयार करके डॉल्फिन्स के समूह के बीच बजाया। जब यह सीटी किसी निकट सम्बंधी की होती थी तो समूह के सदस्य इस पर ज़्यादा ध्यान देते थे।

यह भी लगता है कि यह नामजद सीटी तो डॉल्फिन्स के शब्द भण्डार का एक छोटा-सा अंशमात्र है। प्राकृतिक स्थिति में डॉल्फिन के बीच संवाद में 50 प्रतिशत हिस्सा तो नाम पुकारने का होता है। मगर किसी छोटे टैन्क में, जहां वे एक-दूसरे को देख सकते हैं, ये वाली सीटियां बहुत कम हो जाती हैं और अन्य प्रकार की सीटियां बजाई जाती हैं जिनके अर्थ अभी भी पहेली बने हुए हैं।

वैसे यह बात काफी समय से पता है कि डॉल्फिन्स की संप्रेषण क्षमता काफी विकसित है। कुछ लोगों का तो मानना है कि उनमें एक पूर्ण विकसित भाषा मौजूद है मगर इस बात को आज तक सिद्ध नहीं किया जा सका है। मगर इतना तो पक्का है कि वे नाना प्रकार की आवाज़ें निकालते हैं।

डॉल्फिन विशेषज्ञ रिचर्ड कोनोर का कहना है कि इन जंतुओं में नकल करने की क्षमता भी होती है। इसका मतलब यह भी हो सकता है कि ये शायद किसी सदस्य की अनुपस्थिति में उसके बारे में बात कर सकते हैं। क्या दिलचस्प विचार है कि डॉल्फिन भी पीठ पीछे बातें करते हैं। देखा गया है कि गीत गाने वाले पक्षियों और बंदरों में भी अलग-अलग आवाज़ें होती हैं किन्तु ये आवाज़ें कोई संदेश प्रसारित करने के लिए होती हैं, जैसे कोई खतरा या साथी की तलाश। मगर डॉल्फिन की तरह नामकरण संस्कार इनमें नहीं होता। इनमें प्रत्येक जंतु को उसकी आवाज़ के गुणधर्मों से पहचाना जाता है। ***(स्रोत फीचर्स)***